बुद्धवर्ष २५५०, मार्गशीर्ष पूर्णिमा, ४ दिसंबर, २००६ वर्ष ३६ अंक ६

वार्षिक शुल्क रु. ३०/-
आजीवन शुल्क रु. ५००/-

Hindi Patrika on Website: www.vri.dhamma.org/NewslettersHindi/index.html

धम्मवाणी

सुखो बुद्धानमुप्पादो, सुखा सद्धम्मदेसना।
सुखा सङ्घस्स सामग्गी, समग्गानं तपो सुखो॥
धम्मपद--१९४

सुखदायी है बुद्धों का उत्पन्न होना, सुखदायी है सद्धर्म का उपदेश। सुखदायी है संघ की एकता, सुखदायी है एक साथ तपना।

वैश्विक चैत्य में धातु-सन्निधान समारोह

(ग्लोबल विपश्यना पगोडा में धातु-सन्निधान एवं इसके उद्घाटन-अवसर पर विश्व विपश्यनाचार्य श्री सत्यनारायणजी गोयन्का का उद्बोधन - २९-१०-२००६)

आदरणीय भिक्षुसंघ! उपस्थित महानुभाव! धर्मप्रेमी सज्जनो! सन्नारियो! मेरे प्यारे धर्मपुत्रो! धर्मपुत्रियो! आजके इस महत्त्वपूर्ण अवसर पर हमें एक बात बहुत अच्छी तरह समझ लेनी चाहिये कि कोई इमारत कितनी ही आश्चर्यजनक क्यों न हो, दुनिया के लिये कितनीही अनूठी क्यों न हो, उसका सही लाभ तभी होता है जब कि इससे लोगों का कल्याण होता है। यह इमारत भी लोगों की प्रशंसा का विषय बन कर न रह जाय, बल्कि यह लोगों को शांति प्रदान करे, सही माने में धर्म प्रदान करे, तभी इसकी उपयोगिता है।

हम इस विवरण में नहीं जाना चाहते कि २००० वर्ष पहले भारत की यह कल्याणकारी "विपश्यना" विद्या इस देश से लुप्त क्यों हो गयी? अब आयी है तो इसका स्वागत करना है और कर रहे हैं। हमें उपकार मानना है, हमारे पड़ोसी देश का, जिसने हजारों वर्षों से इस विद्या को संभाल कर रखा। मैं सोचता हूं - सम्राट अशोक का कितना उपकार है हम पर! यदि उसने यह विद्या पड़ोसी देशों में न भेजी होती तो क्या हालत होती? भारत से तो यह सर्वथा लुप्त ही हो गयी थी, सारे विश्व से ही लुप्त हो गयी होती। भेजी और पड़ोसियों ने इसे संभाल कर रखा तो भले २००० वर्ष के बाद सही, वापस तो आयी। "जागे तभी सबेरा" अब इसका ठीक ढंग से उपयोग करना है।

मैं बार-बार कहता हूं कि विपश्यना साधना कहीं कर्मकांडबन कर न रह जाय, बल्कि जीवन में उतरे। जीवन में उतरती है तभी यह विपश्यना विपश्यना है अन्यथा एक संप्रदाय का अंग बन कर रह जायगी। विपश्यना की यही विशेषता है कि यह किसी संप्रदाय से बँधी हुई नहीं है। यह लोगों को बांधती है, जोड़ती है; तोड़ती नहीं। इसका काम तोड़ना नहीं, जोड़ना है। दुनिया के जितने संप्रदाय हैं, जितनी भी परंपराएं हैं, वे सारे विपश्यना के कारण एक साथ बैठ करके ध्यान करते हैं। आज दुनिया का कोई संप्रदाय ऐसा नहीं जिसके अनुयायी विपश्यना के शिविरों में न आते हों। केवल अनुयायी ही नहीं आते, उनके आचार्य आते हैं, उनके धर्मगुरु आते हैं। क्यों आते हैं? देखते हैं कि यहां जो कुछ सिखाया जा रहा है वह इतना पवित्र है कि दोष का कहीं नामोनिशान नहीं। जो बातें सबको मान्य हों विपश्यना वही सिखाती है। भगवान बुद्ध के पास सभी प्रकार के लोग आते थे। मतभेद भी होता ही है। कुछ लोग ऐसे भी आते थे जो मतभेद की बातें करते थे। भगवान मुस्कुराकर कहते थे - जिन-जिन बातों में हमारा मतभेद है उसे एक ओर रखो। जिन-जिन में हमारा मतैक्य है आओ, उस पर बात करें। अरे, काम की बात तो यही है। जैसे -

सदाचार का जीवन जीना है। दुनिया की सारी परंपराएं कहती हैं - सदाचार का जीवन जियो। पर कैसे जीये? विपश्यना कोरा उपदेश देने के लिए नहीं है। भगवान बुद्ध ने कोई बात केवल उपदेश देने के लिए नहीं कही। उन्होंने उपदेश के साथ-साथ करना सिखाया कि सदाचार का जीवन कैसे जीये! जब तक मन हमारे वश में नहीं है, हम मन के मालिक नहीं, मन के गुलाम हैं तो सदाचार का जीवन कैसे जीयेंगे? सदाचार की बाते करेंगे, प्रशंसा करेंगे, लेकिन जीवन में उतारना चाहें तो भी नहीं उतार पायेंगे। इसलिए विपश्यना मन को वश में करना सिखाती है। संसार में कोई धर्म-परंपरा इसका विरोध नहीं करती। सभी परंपराएं स्वीकार करती हैं। परंतु मन को वश में करें कैसे? विपश्यना में मन को वश में करने का जो तरीका है उसमें किसी का कोई विरोध नहीं। जो शिविर में आये हैं वे तो जानते हैं। जो नहीं आये हैं वे समझें कि कैसे मन को वश में करते हैं - पालथी मारकर आराम से बैठ जायँ। जरूरी नहीं कि इस आसन में बैठें या उस आसन में बैठें, पद्मासन में बैठें या अर्धपद्मासन में बैठें। आराम से बैठें - कमर और गरदन सीधी रखें, आंखें बंद, मुँह बंद। अब अपने बारे में जानकारी करनी है कि हमारे बारे में सच्चाई क्या है? जो सच्चाई प्रकट होती है, उसे स्वीकार करना है। कोई कल्पना नहीं या सुनी-सुनाई बात नहीं, कोई पढ़ी-पढ़ाई बात नहीं। अब मुझे अनुभव क्या हो रहा है? मेरे बारे में जानना है। देखें, सांस आ रहा है, सांस जा रहा है। बस, इसे जानते रहें - सांस आ रहा है... सांस जा रहा है। अब जो सांस आ रहा है, जो सांस जा रहा है, इसे क्या कहेंगे? हिंदू सांस कहेंगे, कि मुस्लिम सांस कहेंगे, कि क्रिश्चन सांस कहेंगे, कि बौद्ध सांस कहेंगे? सांस, केवल सांस है...। उसके साथ कोई शब्द न जुड़ जाय। (नो वर्बलायजेशन) तो कहां झगड़ा है? किसका झगड़ा है? अपना सांस देख करके मन को वश में कर रहे हैं, झगड़े की क्या बात हुई?

भगवान बुद्ध बहुत बड़े वैज्ञानिक थे। उन्होंने कोई संप्रदाय स्थापित नहीं किया। सांस को जानने के लिए उन्होंने एक स्थान बताया - **नासिकग्गे**- नासिका के आगे, **उत्तरोट्ठस्स**- ऊपर वाले होंठ के ऊपर, **वेमज्झप्पदेसो** - ऊपरवाले होठ के ऊपर मध्य में एक बिंदु, बस उस स्थान पर मन रहे। यह बड़ा इंपॉर्टेंट नर्व सेंटर है। यहां सच्चाई को जानते हुए मन टिकता है तो बड़ा सूक्ष्म हो जाता है,

तीक्ष्ण हो जाता है, संवेदनशील हो जाता है। तब और सूक्ष्म सच्चाइयां प्रकट होने लगती हैं। सच्चाइयां, कल्पना नहीं। देखते.. देखते.. देखते.. तीन दिन वहां देखते हैं तो भिन्न-भिन्न प्रकार की संवेदनाएं महसूस होने लगती हैं। वे तो होती ही थीं लेकिन कभी जानने की कोशिश नहीं की थी। अब मन को एकाग्र करते-करते,इतना सूक्ष्म बना लिया, इतना संवेदनशील बना लिया कि उस स्थान पर संवेदना (सेंसेशन) मालूम होने लगी। प्रश्न उठता है –इससे क्या मिला? बहुत कुछ मिला। वह बहुत बड़ा वैज्ञानिक था जिसने इस बात को समझा कि यह जो सेंसेशन है इसका मन और शरीर दोनों से बहुत गहरा संबंध है। मन में जो कुछ जागेगा, शरीर पर संवेदना के साथ ही जागेगा। इससे यह सच्चाई प्रकट होने लगती है कि इसे भुलाकर मैं अपनी हानि कर रहा हूं। अंतर्मुखी होकर इस सच्चाई को समझते ही आदमी बदलने लगता है, उसका स्वभाव बदलने लगता है।

मैं जानता हूं हमारे गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन को, कि भारत के साथ उन्हें कितना प्यार था! इतना प्यार कि जब- जब वे सुनते कि भारत में अकाल पड़ा है, बिहार में बाढ़ आई या कहीं अकाल पड़ा तो वे करुणा से भर जाते थे। ध्यान करके मैत्री देते थे। भारत में दंगें हो रहे हैं। एक संप्रदाय से दूसरे संप्रदाय का दंगा हो रहा है, इसे सुन कर वे करुणा से भर जाते थे कि भारत में ऊंच-नीच का भेदभाव कितना दुर्भाग्यपूर्ण हो गया है। कोई व्यक्ति अछूत हो गया तो कोई ऊंचा हो गया? कोई इस मां के पेट से जन्मा है कि उस मां के पेट से जन्मा है, मनुष्य मनुष्य है। क्या हो गया है भारत को? अरे, विपश्यना मिल जायेगी तो भारत की सारी समस्याओं का समाधान हो जायेगा। उनकी बहुत बड़ी तमन्ना थी, बहुत बड़ी इच्छा थी कि यह विद्या कैसे भारत जाय, भारत का कल्याण करे! और फिर सारे विश्व का कल्याण करे। अब उनकी इच्छा पूरी हो रही है। आरंभ हुआ है पर पूरी हो रही है।

देश में गरीबी की बात होती है, दुःख होता है। इतनी बड़ी संख्या में लोग गरीबी रेखा के नीचे रहते हैं। उनको ध्यान करायें "भूखे भजन न होई गोपाला!" भगवान बुद्ध के पास कोई आया। लोगों ने कहा आप इसे ध्यान सिखाइये! उन्होंने पूछा भोजन किया है? नहीं महाराज! पहले भोजन दो इसे, उसके बाद ध्यान सिखायेंगे। यही होता है विपश्यना में; पहले भोजन करा देते हैं फिर ध्यान सिखाते हैं। किसी तबके का आदमी हो, गरीब से गरीब हो या अमीर से अमीर हो, कोई पैसा नहीं लिया जाता। भोजन करो और ध्यान करो।

क्या होता है ध्यान से? एक व्यक्ति जो रोज कमाई करके अपना पेट भरता है, वह दस दिन की कमाई छोड़कर क्यों आयेगा? क्यों आयेगा! इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। अपने देश में अधिकांश गरीब से गरीब आदमी जो कमाता है उसका एक बहुत बड़ा हिस्सा नशे-पते में खो देता है। एक बहुत बड़ा हिस्सा जुए में खो देता है। घर में से चोरी-छिपे पैसे लेकर जाता है। लेकिन जब दस दिन का शिविर किया तो आदमी बदल गया। अब वह जुआ खेल नहीं सकता, वह शराब पी ही नहीं सकता। अरे, तो कल्याण होने लगा ना! यहां पर गरीब मछुआरों की बात हुई, आये हमारे पास। गरीबों की बहुत-सी महिलाएं आकर कहती हैं कि आपने क्या कमाल किया, मेरे पति इतने बदल गये। अब तो जो कमाता है, हाथ में लाकर रखता है। क्या यह अच्छी बात नहीं है? गरीबों की इससे बड़ी सेवा और क्या होगी भला! जो व्यक्ति अपने बच्चों को गालियां देता था, सामान उठाकर मारता था, वह सारे बंद हो गये। अब तो प्यार उमड़ता है। पति-पत्नी में कितना प्यार हो गया! भाई-भाई में कितना प्यार हो गया! घर में झगड़े खत्म होने लगे। क्या यह अच्छी बात नहीं है? इससे अच्छी बात और क्या होगी?

और फिर संप्रदाय संप्रदाय से लड़ें? अब देखते हैं कि इन शिविरों में सब संप्रदाय के लोग बैठते हैं और वे कहते हैं –आप तो हमारी बात सिखा रहे हैं। यही तो हमारे धर्म में भी है। अरे, सबके धर्म में है भाई! विपश्यना ऐसी है जो सबकी है। यह जोड़ती है, तोड़ने का काम नहीं करती। यह सारे ऊंच-नीच के भेदभाव समाप्त करने के लिए है। संप्रदाय-संप्रदाय के भेद समाप्त करने के लिए है। सदाचार का जीवन जीने के लिए है और वह भी ऐसे आलंबन से मन को एकाग्र करे, जो सबका है। ऐसे आलंबन से मन को निर्मल करे, जो सबका है। ध्यान करते हैं और देखते हैं शरीर पर संवेदना होती है। हमें क्रोध आता है, सारे शरीर में जलन पैदा होती है। इस क्रोध को क्या कहेंगे कि हिंदू क्रोध है, कि बौद्ध क्रोध है, कि जैन क्रोध है, कि मुस्लिम क्रोध है? और ऐसे ही तनाव आता है, खिंचाव आता है, दुर्भावना जागती है तो उसे क्या कहकर बुलायेंगे कि हिंदू जाति की है कि बौद्ध जाति की है। और जिस आदमी का क्रोध निकल गया, विकार निकल गए, उसको जो शांति आयी, निर्मलता आयी तो क्या कहें? बौद्ध शांति आयी, जैन शांति आयी? अरे कुदरत का कानून है, विश्व का विधान है, लॉ ऑफ नेचर है। कोई बुद्ध होगा तो वह यूनिवर्सल लॉ ऑफ नेचर ही सिखायेगा। शुद्ध होना सिखायेगा। भगवान बुद्ध ने कहीं "बौद्ध" धर्म नहीं सिखाया। उनकी सारी वाणी १५,००० पृष्ठों की वाणी भारत ने खो दी। अपने पड़ोसी देशों ने संभालकर रखा। इसे वापस लाकर अब रिसर्च करते हैं तो देखते हैं कि कहीं "बौद्ध" शब्द ही नहीं है। यह बौद्ध धर्म नहीं है। बुद्ध अपनी शिक्षा को "धर्म" कहते हैं और जो शिक्षा पा लेता है उसे "धार्मिक" कहते हैं। धर्म, धार्मिक जो सबका होता है। हिंदू धर्म होगा तो हिंदुओं का होकर रह जायगा। बौद्ध धर्म होगा तो बौद्धों का होकर रह जायगा। धर्म तो सबका होगा। और आज जब लोग शिविरों में आकर धर्म सीखते हैं वे देखते हैं कि यह केवल भारत का ही नहीं, सारे विश्व का कल्याण करता है। धर्म सीखे, सदाचार का जीवन जीना सीखे, चित्त को निर्मल करना सीखे, विकारों से मुक्त होना सीखे तो मन में प्यार जागे, करुणा जागे, मैत्री जागे, सद्भावना जागे। अरे तो जीना आ गया ना! जीने की कला आ गयी न! यह केवल उपदेशों से नहीं आती।

बर्मा से भारत आया तो दो-तीन वर्षों के बाद ही एक शिविर महात्मा गांधी के आश्रम में लगा। सेवाग्राम, वर्धा में उनकी पुत्रवधू मिली। उससे विपश्यना की बातचीत हुई। उसने कहा यह कैसे हो सकता है? चित्त को निर्मल करने की क्या कोई विधि होती है? अरे होती है, तुम करके तो देखो। इससे मेरा लाभ हुआ, अनेकों का लाभ हो रहा है। उसने शिविर लगवाया। उसमें गांधीजी के बड़ी उम्र के साथी लोग बैठे, बड़े प्रसन्न हुए। बोले यह तो सचमुच बड़े काम की बात है। विकार निकालती है, जड़ों से निकालती है। वे लोग मुझे विनोबाजी के पास पवनार आश्रम लेकर गये। मैं तो भारत मे नया हूं यहां के संतों से मिलना ही चाहिये। चला गया। उनसे मिला। विनोबाजी ने कहा चित्त की निर्मलता तो दैवयोग से ही होती है। क्या इसके लिए भी कोई विधि होती है? मैंने कहा हां, इससे चित्त शुद्ध होता है। उन्होंने चैलेंज किया कि स्कूल के जो बिगड़े हुये बच्चे हैं उनमें सुधार आ जाय तो हम मानेंगे कि तुम्हारी विद्या काम की है। मैंने नम्रता से कहा कि हमारी नहीं, भगवान बुद्ध की विद्या है, भारत की विद्या है। तो उन्होंने पूछा कि यहां जेल में जो खूंखार कैदी हैं क्या उनमें परिवर्तन आ पायेगा? आप शिविर लगवायें! मैं तो नया आया हूं इस देश में, सिखाना मेरा काम है। परिणाम देखते हैं क्या होता है? इस प्रकार पहले बच्चों के स्कूल में एक शिविर लगा। इतने अच्छे

परिणाम आये कि विनोबाजी चकित रह गये। लेकिन जेल में शिविर नहीं लग पाया। क्योंकि रात में वहां बाहर का कोई आदमी नहीं रह सकता। जेल के नियमानुसार सुबह आये, शाम को चला जाये। हमने कहा ऐसे नहीं होगा। मुझे तो चौबीस घंटे वहीं रहना पड़ेगा। इसके बिना यह संभव नहीं होगा। उसके दो वर्ष बाद विनोबाजी का शरीर शांत हो गया।

कुछ वर्षों बाद राजस्थान सरकार के गृह सचिव श्री रामसिंह जी शिविर में बैठे। उन्होंने पाया कि यह विद्या कितनी सेक्युलर है कि इसमें संप्रदाय का कहीं कोई नामोनिशान नहीं है। यह तो सारे विश्व में फैलनी चाहिए। हमने कहा विश्व में फैलेन फैले, जेल में शिविर लगना चाहिये! इस प्रकार उनकी व्यवस्था में राजस्थान के केंद्रीय जेल में शिविर लगा, जिसमें रिसर्च की मेटियां बैठीं। इतना अच्छा परिणाम (वंडरफुल रिजल्ट) आया कि अब तो विश्व के अनेक जेलों में विपश्यना के केन्द्र बन गये हैं।

बात समझनी चाहिये कि विपश्यना क्या करती है? जैसे वे कैदी है वैसे ही हम सब कैदी हैं। हम सब अपने-अपने विकारों की कैद में हैं। वे कैदी भी तीन दिवस आनापान करते-करते, सांस को देखते-देखते जब संवेदना देखने लगे तो विकारों की परतें उतरने लगीं, गांठें खुलने लगीं। तब मन और तेजी से भागता है। लेकिन धीरज के साथ काम करते जाते हैं। काम करते-करते मन बीती बातों में दौड़ता है। साधक देखता है – किस बात में दौड़ता है। उससे पूछते हैं तो कहता है कि भाई, मेरे मन में तो यही बात आती है कि बाहर निकलूंगा तो उस जज की हत्या करूंगा, उस पुलिस वाले की हत्या करूंगा। बाहर निकलूंगा तो जिसने मेरे खिलाफ गवाही दी, उसकी हत्या करूंगा। अच्छा! जब तेरे मन में ये विचार आते हैं तो जरा ध्यान से देख कि तेरे शरीर में क्या-क्या होने लगा? देखता है अरे, बड़ी जलन होती है। सारे शरीर में जलन होती है, धड़कन बढ़ गयी, तनाव बढ़ गया। व्याकुल हुआ ना! दूसरे को जब मारोगे तब मारोगे, अपने आप को तो मारे जा रहे हो न! भगवान बुद्ध की बहुत बड़ी खोज है कि अरे! तुम पहले अपनी हत्या करते हो, फिर किसी और की हत्या करते हो। पहले अपनी सुख-शांति खोते हो, फिर किसी दूसरे की। विकार जगाये बिना कोई दुष्कर्म होता नहीं और विकार जगाते ही पहले तुम व्याकुल हो गये! यह बात उपदेशों से नहीं समझ में आती। स्वयं देखता है कि विकार जगाता हूं तो कितना व्याकुल होता हूं! अपनी हानि करने लगा। धीरे-धीरे-धीरे स्वभाव बदलता है।

हम सब की यही हालत है। इसमें हिंदू क्या करेगा, बौद्ध क्या करेगा, जैन क्या करेगा, ईसाई क्या करेगा, ब्राह्मण क्या करेगा, क्षत्रिय क्या करेगा, वैश्य क्या करेगा, शूद्र क्या करेगा, ? अरे मनुष्य मनुष्य है, मानवी मां की संतान है। भेदभाव किस बात का? इस मां के पेट से जनम लिया तो महान हो गया, उस मां के पेट से जनम लिया तो नीचा हो गया! क्या हो गया सारे देश को? हम कहां डूब गये? अरे अब उठो! उसके बाहर निकलो! विपश्यना उठायेगी, उपदेश नहीं उठायेगा। लड़ाई झगड़े नहीं उठायेंगे। प्यार उठायेगा। लोग समझने लगेंगे कि आदमी, आदमी है। सब एक जैसे हैं। विकार सबके एक जैसे हैं। विकार जगाने पर व्याकुलता एक जैसी आती है। विकार दूर करले तो शांति एक जैसी आती है। इसमें धर्म क्या करेगा, संप्रदाय क्या करेगा, जातिवाद क्या करेगा? सारे देश का बहुत बड़ा कल्याण होने वाला है। शुरू हो गया है, सारे विश्व का कल्याण होने वाला है। विपश्यना यह काम करती है। ऐसी बड़ी-बड़ी इमारतें बन जाने से बात नहीं बनेगी। बड़ी इमारतें इसलिये बनाते हैं कि जिस व्यक्ति ने अपनी तरफ से इतनी बड़ी खोज की, जो संसार का कोई अन्य व्यक्ति नहीं कर सका। २,६०० वर्ष पहले इस महान वैज्ञानिक ने यह खोज की कि सारे विश्व में कोई ठोसपना नहीं है। "**सब्बो पज्जलितो लोको, सब्बो लोको पकम्पितो!**" (महानिद्देसपालि- पेज ३०४) २,६०० वर्ष पहले बिना किसी लैब के, बिना किसी इंस्ट्रूमेंट के, भीतर की सच्चाई को देखते-देखते यह खोज की। आज के वैज्ञानिक भी यही बात कहने लगे हैं कि कोई सॉलिडिटी नहीं है।

ऐसी खोज करके कोई कौतूहल पूरा नहीं किया कि कोई ठोसपना नहीं है। बल्कि भीतर जो संवेदना चल रही है, उसको जानकर अपना सुधार करना शुरू कर दिया। इससे अहंकार निकलता है। किसको "मैं" मानूं, किसको "मेरा" कहूं? सब कुछ तो नष्ट हो रहा है। जिस व्यक्ति ने इतनी बड़ी विद्या ढूंढ निकाली और लोगों का इतना बड़ा कल्याण किया, हमने दुर्भाग्य से उसे खो दिया। अब उसके जो अवशेष मिले हैं उनके आधार पर उनका सम्मान होना चाहिए। अब इतनी बड़ी संपदा से निर्मित, इतना बड़ा यह स्तूप उनके अवशेषों का सम्मान करने के लिये है। सम्मान इसलिए कि हमारे देश में एक ऐसा महापुरुष हुआ, जिसने विश्व कल्याण के लिये इतनी बड़ी विद्या खोज निकाली। हम उनका सम्मान नही करें? सम्मान ही करते हैं – हजरत मुहम्मद साहेब का, हजरतबल मस्जिद (मास्क) में उनका बाल रखते हैं। सम्मान ही करते हैं – बर्मा के लोग भगवान बुद्ध के बाल (केशधातु) श्वेडगोन पगोडा में रखे हैं। सम्मान करते है – भगवान बुद्ध का दांत श्रीलंका में पगोडा में रखे हैं। सम्मान ही करते हैं! हमें भी होश आये – हम भी सम्मान करना सीखें! सम्मान इसलिये करते हैं कि जिससे हमें इतना कुछ प्राप्त हुआ, उसका उपकार मानते हैं। लेकिन असली सम्मान तो तब होगा जब लोग उसके बताये हुये रास्ते पर चलने लगेंगे। और फिर यहां तो दोनों काम हो रहे हैं। एक ओर सम्मान हो रहा है उनके अवशेषों का और दूसरी ओर लोग उनके बताये हुये रास्ते पर चलने के लिये एकत्र हो रहे हैं। अपनी शांति के लिये, औरों की शांति के लिये। अपने भले के लिये। औरों के भले के लिये! अपने मंगल के लिये! औरों के मंगल के लिये! खूब धर्म जागे! सबका मंगल हो! सबका कल्याण हो!

कल्याणमित्र,
स.ना.गो.

धम्मगिरि पर पालि-अंग्रेजी कोर्स

धम्मगिरि पर ८ महीने का अंग्रेजी भाषा में पालि-प्रशिक्षण शिविर चलता है जिसमें पालि की प्रारंभिक पढ़ाई होती है। अगला सत्र मार्च २००७ में प्रारंभ होगा, जो ३१ अक्टूबर, २००७ तक चलेगा।

प्रवेश-योग्यता – जिन्होंने कम-से-कम पांच दस-दिवसीय शिविर और एक सतिपट्ठान शिविर किया हो, विगत दो वर्ष से नियमित साधना करते हों, विपश्यना विधि के प्रति पूर्णतया समर्पित हों और पांचों शीलों का काड़ाई से पालन कर सकते हों – **क्षेत्रीय आचार्य** द्वारा अनुमोदन करवाकर अपना आवेदन-पत्र भेज सकते हैं। आवेदन-पत्र – Website: www.vri.dhamma.org पर उपलब्ध है। वहां से ले करके भरें अथवा 'विपश्यना विशोधन विन्यास', धम्मगिरि से मँगा कर भरें और क्षेत्रीय आचार्य के हस्ताक्षर करवाकर ही भेजें। अन्यथा उसे अवैध माना जायगा और कोई उत्तर नहीं दिया जायगा।

वर्ष २००८ में **उच्च पालि शिक्षा (Adwance Pali Course)** की पढ़ाई प्रारंभ होगी, जिसके लिए प्रारंभिक पालि सत्र पास होना आवश्यक होगा। यह सत्र फरवरी २००८ में आरंभ होकर, ३१ अक्टूबर, २००८ तक चलेगा।

फार्म व अधिक जानकारी के लिए **संपर्क** – व्यवस्थापक, 'विपश्यना विशोधन विन्यास', धम्मगिरि, इगतपुरी- ४२२४०३.

Postal Regn. No. LII/REN./RNP-46/2006-08

Postal Licence No. LII/RNP-WPP-03

कोल्हापुर में पगोडा निर्माण

धम्मालय, कोल्हापुर में पगोडा और शून्यागार निर्माण का काम आरंभ हो चुका है जिसे दिसंबर, २००६ तक पूरा कर लेने की योजना है। अन्य निर्माणाधीन योजनाएं इस प्रकार हैं – केंद्रीय शून्यागारों पर लागत व्यय –रु. ७५,०००/–; गर्म जलापूर्ति के लिए रु. २,५०,०००/–; पगोडा निर्माण हेतु – रु. २,००,०००/–; **संपर्क** – 'दक्खन विपश्यना अनुसंधान केंद्र', धम्मालय, मु.पो.- आलते, ता. हातकणंगले,जिला-कोल्हापूर-४१६१२३.

मंगल मृत्यु

☹ काठमांडू (नेपाल) की अनागारिका रत्नमंजरी ने ५ अक्टूबर को शांतिपूर्वक शरीर छोड़ा। वह प्रारंभ से ही धर्म से जुड़ीं और सहायक आचार्या और फिर पूर्ण आचार्या बन कर धर्मप्रसार में बहुत बड़ा योगदान दिया।

☹ इंदौर के श्री मोहनलाल केला ने १८ अक्टूबर को मुंबई अस्पताल में शांतिपूर्वक शरीर छोड़ा। वे विपश्यना से जुड़े तो पूरे परिवार को धर्मरस चखाया और अनेक शिविरों का आयोजन करवाया तथा वरिष्ठ सहायक आचार्य के रूप में अनेकों के मंगल में सहायक हुए। असीम धर्मसेवाओं के बल पर इन दोनों की सद्गति निश्चि

त

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

१. डॉ. बीरेंद्र बिष्ट, उत्तरांचल
२. श्री हिमतलाल जोशी, गांधीधाम-कच्छ
३. श्रीमती पुष्पलता कोलते, नागपुर
४. श्रीमती कंचन लील, इगतपुरी
५. श्रीमती उमा मानधना, अमरावती
6. Mr. Gregory & Mrs. Patricia Calhoun, *USA*
7. Ms. Anita Comelo, *USA*
8. Mr. Alan Xia, *USA*
9. Mr. Alan Nicholson, *Canada*

बालशिविर शिक्षक

१-२. श्री परमिंदर सिंह एवं श्रीमती निर्मल कौर गिल, पंजाब
3. Mrs. A. M. B. Chandrawatthie Menike, *Sri Lanka*
4. Mrs. Tikiri Bandage Sunethra Kumari Tilakratna, *Sri Lanka*
5. Mrs. Pan, Lingna, *Taiwan*
6. Ms. Hu, Yiwen, *Taiwan*
7. Ms. Veerle Offerhaus, *Belgium*
8. Mr. Grant Harper, *Australia*
9. Mr. Bjarni Wark, *Australia*
10. Mrs. Paula Cauduro, *Australia*

दोहे धर्म के

नमन करूं मैं बुद्ध को, कैसे करुणागार!
दुःख मिटावन पथ दिया, सुखी करन संसार॥
नमस्कार उनको करूं, जो सम्यक सम्बुद्ध।
जो भगवत अरहंत जो, जो पावन परिशुद्ध॥
याद करूं जब बुद्ध की, करुणा अमित अपार।
तन मन पुलकित हो उठे, चित छाये आभार॥
यही बुद्ध की वंदना, विनय नमन आभार।
जागे बोध अनित्य का, होवें दूर विकार॥
चित्त निपट निर्मल रहे, रहूं पाप से दूर।
यही बुद्ध की वंदना, रहे धरम भरपूर॥
यही बुद्ध की वंदना, पूजन और प्रणाम।
शुद्ध धरम धारण करूं, मन होवे निष्काम॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा.) लिमिटेड
८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई-४०० ०१८
फोन: २४९३ ८८९३, फैक्स: २४९३ ६१६६
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

नमन करूं मैं बुद्ध नै, किसा'क करुणागार।
दुक्ख निवारण पथ दियो, सुखी करण संसार॥
स्रद्धा जागी बुद्ध पर, कर्‌यो धरम अभ्यास।
जनम-जनम री बुझ गयी, अंतरतम री प्यास॥
उळझण ही उळझण बढी, मिल्यो न दुख रो अंत।
मुक्ति मोक्ष निरवाण रो, पंथ दियो भगवंत।
जदि संबुध ना ढूंढता, सांच धरम रो पंथ।
बढतो जातो भटकतां, भवभय दुक्ख अनंत॥
याद करूं जद बुद्ध नै, तन मन पुलकित होय।
किसो सुनर जग जलमियो, जन जन मंगळ होय॥
गुण गाऊं मैं बुद्ध रा, मुक्त कंठ साभार।
परम धरम बांट्यो इस्यो, हुयो जगत उपकार॥

आकांक्षा इंटरप्राईसेस
ई - १/८२, अरेरा कालोनी, भोपाल (म. प्र.) - ४६२०१६
फोन: (०७५५) २४६१२४३, २४६२३५१; फैक्स: (०७५५) २४६८१९७
Email: aeent@airtelbroadband.in
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२४०३, दूरभाष : (०२५५३) २४४०८६, २४४०७६.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, ६९- बी रोड, सातपुर, नाशिक-४२२००७. **बुद्धवर्ष २५५०, मार्गशीर्ष पूर्णिमा, ४ दिसंबर, २००६**

वार्षिक शुल्क रु. ३०/-, विदेश में US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. ५००/-, " US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. १९१५६**/७१. Regn. No. LII/REN./RNP-46/2006-08

Licenced to post w**ithout Prepayment of postage** -- Licence number-- LII/RNP-WPP-03
Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२४०३
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (०२५५३) २४४०७६, २४४०८६
फैक्स : (०२५५३) २४४१७६
e-mail: info@giri.dhamma.org
Website: www.vri.dhamma.org